मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । | दुनियाँ के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है । | दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 21 | मार्च 1990 | 50 पैसे

दो नजरिये

पिछले अंक में फैक्ट्री के उदाहरण में हमने देखा था कि इस समय हावी सोच शोषण पर आधारित वर्तमान सामाजिक सम्बन्धों को कहीं छुपाने तो कहीं उन्हें मान्य बनाने का प्रयत्न करती है । दूसरी तरफ नई सोच वर्तमान वास्तविकता को समझ कर एक नये खुशहाल समाज के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाने की सम्भावना प्रदान करती है । आइये इस लेख में इन दो नजरियों के दृष्टिकोण से देश के प्रश्न को देखें ।

आओ देखें कि मजदूर वर्ग को दबाये रखने में हावी सोच के इस स्तम्भ की क्या भूमिका है । प्रचलित सोच के दायरे में देश पूजनीय है । मेरा देश महान है, हम सब देशवासी भाई-बहन हैं, हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है··· । कुछ नया नहीं कह रहे हम, प्रचलित विचारों के यह तो कुछ नमूने हैं जो कि आये दिन हमें सुनने को मिलते हैं । देश को एक अन्तर्विरोध-रहित इकाई के रूप में दर्शाया जाता है जिसमें कि सभी के हित एक समान हैं । और यह कहा जाता है कि राष्ट्रीय हित निजी हितों से ऊपर हैं, राष्ट्र के लिये कुर्बानी देना गर्व की बात है । साथ ही यह ध्यान में रखना जरूरी है कि देश की महानता की यह दुहाई किसी देश-विशेष की जागीर नहीं है । यह तो हर देश में होता है भारतियों द्वारा भारत, चीनियों द्वारा चीन, रूसियों द्वारा रूस, अमरीकियों द्वारा अमरीका इत्यादि को महान माना जाता है । और आज साफ-साफ जाहिर है कि विभिन्न देशों के हितों में आपसी टकराव है ।

पर क्या किसी देश-विशेष में सभी के हित समान हैं ? क्या मजदूरों और पूंजी के नुमाइन्दों के हित सिर्फ इसलिये एक हो सकते हैं कि उनका देश एक है ? फिर देश की मजबूती किसकी मजबूती है ? क्या विभिन्न देशों के मजदूरों के हितों में टकराव है ? ऐसे क्या कारण हैं कि इन्सान देशों में बंटे हैं ? और यह बंटवारा किसके फायदे में है ?

यहां यह समझना जरूरी हो जाता है कि पूंजी एक सामाजिक और ऐतिहासिक सम्बन्ध है जिसका आधार मजदूर लगा कर मन्डी के लिए उत्पादन है । विश्व पूंजी के विभिन्न गुट विभिन्न देशों के दायरों में संगठित हैं । पूंजी के यह गठन दुनियाँ-भर के मजदूरों द्वारा उत्पादित अतिरिक्त-मूल्य के अधिकाधिक भाग को हथियाने की होड़ में लगे हैं । देश को समझने का यह एक भौतिक आधार है । विश्व मन्डी में बने रहने के लिए विभिन्न गुट आपस में लड़ रहे हैं । इस जंग में तोप है सस्ता माल जिसके उत्पादन के लिये अधिकाधिक शोषण जरूरी है । पर बढ़ते शोषण का अर्थ है मजदूरों का बढ़ता असंतोष । और इस असन्तोष को दबाने के लिये आवश्यक है असली तोप ।

इस प्रकार समझ में आता है कि देश किसका नारा है, देश की मजबूती किसकी मजबूती है । विभिन्न देशों के बीच टकराव वास्तव मे पूंजी के नुमाइन्दों की आपसी लड़ाई है । शोषित मजदूर वर्ग के उत्पादन को हथियाने के लिये लुटेरों की यह आपसी लड़ाई है ।

फरीदाबाद हो चाहे धनबाद, कोरिया हो चाहे इंग्लैंड, या फिर अमरीका या रूस, सभी जगह पर मजदूर पूंजी के सम्बन्ध में जकड़े हैं । अपनी श्रम शक्ति बेच कर वे वेतन लेते हैं । अपनी बनाई वस्तु पर उनका कोई कन्ट्रोल नहीं है । अत: मजदूर और पूंजी के हितों में कोई भी समानता नहीं है, पूंजी का लाल-पीला-तिरंगा जो भी रंग-रूप हो । पूंजी वाले सामाजिक सम्बन्ध को तोड़ कर नया समाज बनाने के लिये यह समझना जरूरी है कि सभी मजदूरों का संघर्ष एक है । और प्रचलित सोच के बोझ से छुटकारा पाना मजदूर संघर्ष के काम का एक अहम हिस्सा है ।

— अ - जी

दुनियां में मजदूरों के संघर्ष

अमरीका

रूस, चीन, पोलैंड, रोमानिया आदि राज्य पूंजीवादी देशों में मजदूरों के संघर्षों की खबरें कुछ समय से दुनिया-भर में पूंजीवादी प्रचार में प्रमुख स्थान पर हैं । इन खबरों से रूस, चीन आदि राज्य पूंजीवादी देशों को समाजवादी देश कहने वाले नकली कम्युनिस्ट बेहद परेशान हैं । यह सही है कि पूंजीवादी गुटों की आपसी खींचा तान का इस प्रचार को फैलाने में हाथ रहा है पर इसे फैलाने का यह मुख्य कारण नहीं है । राज्य-पूंजीवाद का भांडा फोड़ कर नकली कम्युनिस्टों को परेशान करना इस पूंजीवादी प्रचार का लक्ष्य नहीं है— रूस के राष्ट्रपति गोर्बाचोव को टिकाये रखने के लिये अमरीका के राष्ट्रपति बुश भरसक कोशिश कर रहे हैं । पूंजीवादी प्रचार द्वारा रूस, चीन आदि की घटनाओं को उछालने का असली कारण यह है कि इसके जरिये पूंजीवाद के क्रान्तिकारी विकल्प, समाजवाद को कलंकित किया जा सकता है । पहले राज्य पूंजीवाद को समाजवाद प्रचारित करो और फिर राज्य पूंजीवाद के खिलाफ मजदूर संघर्षों को समाजवाद के खिलाफ मजदूर असन्तोष प्रचारित करो— कम्युनिज्म पिट गया ! मार्क्सवाद मर गया ! तथास्तु !! यह है पूंजीवादी प्रचार का असल मकसद ।

लेकिन समस्त पूंजीवादी प्रचार की दिक्कत यह है कि पूंजीवादी व्यवस्था का संकट गहरा रहा है । इसकी वजह से एक तरफ रूस-चीन जैसे पूंजीवाद के राज्य पूंजीवादी रूप के परखचे उड़ रहे हैं तो दूसरी तरफ पूंजीवाद के अमरीकी रूप को मजदूरों के संघर्ष बेनकाब कर रहे हैं । और चूंकि आजकल पूंजीवादी प्रचार पूंजीवाद के अमरीकी रूप पर परदे डालने के भरसक प्रयत्न कर रहा है, इसलिये हम यहां फिर अमरीका में मजदूर संघर्षों की एक झलक दे रहे हैं । सामग्री हमने अमरीका में छपने वाले एक छोटे अखबार न्यूज एन्ड लैटर्स के दिसम्बर 89 अंक से ली है ।

अमरीका में शिकागो वह शहर है जहां 1886 में आठ घन्टे काम के दिन की डिमान्ड करते मजदूरों पर सरकार ने गोलियाँ बरसाई थी । उस गोलीबारी में शहीद हुये मजदूरों की याद में हम आज भी मई दिवस मनाते हैं । **सौ साल बाद आज उसी शिकागो में 12 घन्टे रोज काम करने को मजबूर किये जा रहे मजदूर माँग** कर रहे हैं **कि एक दिन में दस घन्टे की ड्यूटी का कानून बने ।** यूं कागज पर आठ घन्टे का कानून है

(शेष अगले पृष्ठ पर)

पढ़िये और पढ़ाइये

सचेत मजदूर का
क-ख-ग

निर्जीव से जीव-पशु से मानव-भारत में मानव-आदिम साम्यवादी समाज-स्वामी समाज-भारत में जातियां-सामन्तवाद-सरल माल उत्पादन-विश्व मन्डी-पूंजीवादी माल उत्पादन—पूंजी और भारत में पूंजी-कांग्रेस पार्टी और मोहनदास करमचन्द गांधी-गांधीवाद नेहरूवाद-पूंजी आज-सचेत मजदूरों के कार्यभार ।

50 पेज 5/—

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, फरीदाबाद-121001 से डाक द्वारा मंगवा सकते हैं ।

IN PRESS

ROSA LUXEMBURG'S 'THE ACCUMULATION OF CAPITAL', an abridged version with an introduction by **KAMUNIST KRANTI.**

200 pages (approx.) 30/-

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना । 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना । 3 भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिये काम करना । 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना ।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है । बातचीत के लिये बेझिझक मिलें । टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे ।

संपर्क – मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद –121001

बाटा

1988 में बाटा मैनेजमेन्ट ने बंगाल में बाटानगर मजदूरों के सामने 37 सूत्री "माँग-पत्र" रखा था। अब बाटा मैनेजमेन्ट ने फरीदाबाद बाटा मजदूरों के सामने 18 सूत्रों वाला "मांग-पत्र" रखा है। मैनेजमेन्ट के दोनों "मांग-पत्रों" की साझी बात यह है कि बाटा कम्पनी संकट में है और कम्पनी को संकट से उबारने के लिये मजदूर कुर्बानी दें। बाटानगर में अपनी "मांगें" मनवाने के लिये मैनेजमेन्ट ने 1988 में चार महीने लोक आउट किया था। 6 दिसम्बर 89 को बाटा फरीदाबाद के मजदूरों को अपना "माँग-पत्र" देने के बाद मैनेजमेन्ट ने 15 फरवरी 90 के अपने "समाचार" में फरीदाबाद फैक्ट्री में **1989** में एक करोड़ **90** लाख रुपयों के घाटे की जानकारी के साथ मजदूरों को धमकी दे दी है। इन परिस्थितियों में फरीदाबाद में मैनेजमेन्ट के सम्भावित कदमों से निपटने के लिये मजदूरों को आपस में विचार-विमर्श करना चाहिए — हाथ पर हाथ धरे मैनेजमेन्ट के हमलों का इन्तजार करना मजदूरों की बरबादी की राह है।

औरों की ही तरह बाटा मैनेजमेन्ट भी मजदूरों को बाँट कर उन पर हमले करती रही है तथा यहां भी बिचौलियों ने मैनेजमेन्ट के लिये इस काम को आसान किया है। बाटानगर तालाबन्दी के समय फरीदाबाद में ओवर टाइम काम करवा कर बिचौलियों ने बाटानगर मजदूरों को तो दलदल में धकेला ही उन्होंने फरीदाबाद मजदूरों के लिये भी काँटे बोये। बाटा फरीदाबाद मजदूरों के लिये अब वह काँटों की फसल पक रही है। ऐसे में मजदूरों द्वारा स्वयं इन काँटों को जलाने के लिये कदम उठाने जरूरी हैं। बाटानगर लॉक आउट के समय ओवर टाइम की गलती के लिये वहाँ के मजदूरों से खेद व्यक्त करना और उसे न दोहराने के संकल्प से बाटा मैनेजमेन्ट के खिलाफ समस्त बाटा वर्करों के एकजुट संघर्ष की दिशा में बढ़ा जा सकता है। यहाँ के मजदूरों की यह खुशकिस्मती है कि उनमें से एक-दो ने बाटानगर लॉक आउट के समय ओवर टाइम काम करने से इन्कार करके इस राह पर बढ़ने को बहुत मुश्किल नहीं होने दिया है। बिचौलियों और उनकी फैडरेशन के चक्कर में पड़ना मजदूरों द्वारा खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना होगा।

साथ ही, बाटा मजदूरों को समझ लेना चाहिये कि सब पूंजीवादी हेरा-फेरियों के बावजूद यह तथ्य है कि लाल-पीले रंगों वाली सम्पूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था संकट में है तथा जहाँ तक पूंजी के नुमाइन्दों का बस चलेगा, इस संकट का बोझा मजदूरों पर थोपा जायगा। बढ़ते दमन-शोषण से मुक्ति के लिये कम्युनिस्ट क्रान्ति की राह ही मजदूरों की राह है और वैसे भी, नई समाज व्यवस्था का निर्माण मानव समाज के एजेन्डा पर है। कम्युनिस्ट क्रान्ति की राह पर बढ़ने के लिये मजदूरों को यह समझना होगा कि वर्तमान परिस्थितियों में एक फैक्ट्री के दायरे में संघर्ष का सीमित रहना मजदूरों की ताकत कमजोर करता है तथा मैनेजमेन्ट की शक्ति बढ़ाता है। इसलिये बाटा मजदूरों को इस पर विचार करना चाहिये कि बाटा मैनेजमेन्ट के सम्भावित हमले के खिलाफ फरीदाबाद के अन्य मजदूरों को संघर्ष में जोड़ने के लिये बाटा मजदूर क्या-क्या कदम उठायें। अलग-अलग फैक्ट्री के चक्रव्यूह को ध्वस्त करके, संघर्ष को फैलाकर व तीखा करके ही मजदूर अब मैनेजमेन्टों और उनके पूंजीवादी तन्त्र से टक्कर ले सकते हैं।

—o—

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पर शिकागो में एकरिच मीटपैकर्स के मजदूरों को **13**-13 दिन तक लगातार हर रोज 12 से **13** घन्टे काम करना पड़ता है। यह इसलिए कि ओवर-टाइम कम्पलसरी है। इसलिए यह मजदूर मांग कर रहे हैं कि हफ्ते में एक दिन की छुट्टी और सप्ताह में 60 घन्टे, यानि 10 घन्टे रोज की ड्यूटी का कानून बने।

अमरीका के एक और बड़े शहर, लॉस एंजेलस में सफाई मजदूरों से **11** घन्टे रोज की औसत ड्यूटी ली जाती है। कई बार तो इन मजदूरों को पूरे सप्ताह हर रोज **13** घन्टे काम करना पड़ता है पर यूनियन मजदूरों को ठन्डा करने का ही काम करती है। इस सब से तंग हो कर इन मजदूरों ने चारणचक्क हड़ताल की। इन मजदूरों का कहना है कि काम के बोझे से उनका शरीर इतना दर्द करने लगता है कि छुट्टी वाले पूरे दिन वे सोते रहते हैं।

लॉस एंजेलस में ही हयात होटल के मजदूरों की हड़ताल में भी काम के घन्टे कम करवाना और वर्क लोड घटवाना प्रमुख मुद्दे हैं।

फरीदाबाद हो या शिकागो, कलकत्ता हो या मास्को, बम्बई हो या लन्दन, आज दुनियां-भर में हर जगह पूंजीवादी व्यवस्था के गहराते संकट का बोझा पूंजी के नुमाइन्दे मजदूरों पर थोप रहे हैं। कम लागत पर अधिक उत्पादन करने की पूंजीवादी होड़ में मजदूरों का कचूमर निकाला जा रहा है। और यह पूंजीवादी होड़ बढ़ती ही जायेगी। इसलिए अपनी रक्षा के लिए, पूंजीवादी राक्षस को दफनाने के लिये और हंसी-खुशी भरे खुशहाल समाज के निर्माण के लिये मजदूरों को भारत, पाकिस्तान, रूस, चीन, अमरीका, फ्रान्स की देश-रूपी दीवारों को तोड़ते हुये दुनियां के मजदूरों की एकता की तरफ कदम बढ़ाने होंगे। दुनियां के मजदूरो, एक हो!

महालक्ष्मी होटल····· करीम होटल

कैन्टीन-होटल-ढाबों में काम करने वाले वर्कर यहाँ आमतौर पर सबसे दबे-कुचले मजदूरों में हैं। इधर हमें फरीदाबाद में थ्री स्टार होटल महालक्ष्मी में हड़ताल और दिल्ली में कबाब की शोहरत वाले होटल करीम में तालाबन्दी की जानकारी मिली है।

महालक्ष्मी होटल में मजदूरों को 800 न्यूनतम वाला वेतन तो दिया ही नहीं जा रहा, उन्हें मिल रहे सर्विस चार्ज के चौथाई हिस्से को भी हड़पने की मैनेजमेन्ट की कोशिश है। वर्करों द्वारा इसका विरोध करने पर मैनेजमेन्ट ने 3 जनवरी से एक-एक करके मजदूरों को काम से निकालना शुरू कर दिया। मैनेजमेन्ट के इस हमले के खिलाफ 2 फरवरी से मजदूर हड़ताल पर हैं।

करीम होटल के मजदूरों ने जब अपनी डिमान्डें पेश की तो मैनेजमेन्ट ने **18** जनवरी को तालाबन्दी कर दी।

महालक्ष्मी के वर्करों को जहां मैनेजमेन्ट के छुट्ट गुन्डों से निपटना पड़ रहा है वहां करीम के मजदूरों को पुलिस-रूपी संगठित गुन्डों का सामना करना पड़ रहा है। दोनों जगहों के मजदूरों को दिल्ली और हरियाणा की लेबर डिपार्टमेन्टों के अधिकारियों से उनकी नपुंसकता के किस्से ऊपर से सुनने को मिलते हैं—श्रम विभाग "बुलाते" हैं पर मैनेजमेन्ट पेश ही नहीं होती।

महालक्ष्मी के मजदूरों को तम्बू में इक्के-दुक्के बैठे रहने या करीम के वर्करों को एक किनारे बैठे रहने की बजाय हर रोज सुबह और शाम जलूस निकालने चाहिये। साथ ही साथ इन वर्करों को अन्य मजदूरों को संघर्ष में जोड़ने की कोशिशें करनी चाहियें। महालक्ष्मी और करीम के मजदूरों को याद रखना चाहिये कि लेबर डिपार्टमेन्ट के लटकों-झटकों और लीडरों की फूं-फाँ में नहीं बल्कि फैलते और तीखे होते संघर्ष से ही वे सफलता की राह पर बढ़ सकते हैं।

महालक्ष्मी हो या करीम, हिन्दू हों या मुसलमान, पूंजी के नुमाइन्दे तो मजदूरों के लिये दमन और शोषण के प्रतीक हैं। जिन्दा रहने के लिए अपनी मेहनत करने की शक्ति बेचने को मजबूर लोगों का, मजदूरों का कोई धर्म, जाति, नस्ल, प्रान्त और देश नहीं होता। दुनिया के मजदूरों की एकता के लिये उठे कदम, दमन शोषण से मुक्ति की राह पर बढ़े कदम हैं।

एवरी इन्डिया में हड़ताल

8 फरवरी से एवरी में लगातार हड़ताल जारी है। लेकिन अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों के दुखद अनुभवों से एवरी के मजदूरों ने कोई सीख नहीं ली है। फैक्ट्री गेट के पास ताश, लीडरों द्वारा लेबर डिपार्टमेन्ट के चक्कर और इस-उस मन्त्री को रजिस्ट्री वाली पुरानी पिटी-पिटाई लीक ही इन मजदूरों ने भी पकड़ी है। और यह सब तब जबकि आज यह तथ्य बार-बार सामने आ रहा है कि किसी भी फैक्ट्री में शुरू हुआ मजदूरों का संघर्ष अगर फैलता व तीखा नहीं होता तो समय के साथ मजदूर कमजोर पड़ते हैं। लम्बी खिचती हड़ताल से आज की हालात में मजदूरों की ताकत बढ़ती नहीं है क्योंकि फैक्ट्री के मालिकाने में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। आज आमतौर पर किसी फैक्ट्री में एक ही व्यक्ति का अधिक पैसा नहीं लगा होता। आज मालिक नहीं बल्कि मैनेजमेन्ट से मजदूरों को निपटना पड़ता है।

इन परिस्थितियों में एक फैक्ट्री में लम्बी हड़ताल और श्रम विभाग, डी सी-एस पी, मन्त्री पर आस लगा कर बैठे रहना मजदूरों की बरबादी की राह है। अपनी हड़ताल की ताकत बढ़ाने के वास्ते एवरी के मजदूरों के लिए यह जरूरी है कि वे हर रोज जलूस निकालें और आस-पास की फैक्ट्रियों के मजदूरों को संघर्ष में शामिल करने के लिये पहल-कदमी करें। दुनियां-भर के मजदूरों के संघर्षों का अनुभव हमें सीख दे रहा है कि फैलता और तीखा होता मजदूर संघर्ष ही सफलता की राह है।

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेर सिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गाँ. मेमो. न. से मुद्रित